8. हर्ष के समय शबर वनवासी

विंध्याचल के पर्वत व वन

खेतिहर गांव और जंगल की बस्तियां

उत्तर भारत और दक्षिण भारत के गांवों के बारे में तुमने पिछले दो पाठों में पढ़ा था। ऐसे गांव अधिकतर नदियों के मैदान व पठारी इलाकों में बसे थे। वहां के अधिकतर किसान हल-बैल से खेती करते थे। वे नए-नए सिंचाई के साधनों का उपयोग कर रहे थे। इस कारण उनके गांव संपन्न थे। वहां घनी आबादी होती थी। घर पास-पास सटे हुये बना करते थे। उन्हीं गांवों से राजा व भोगपतियों को लगान मिलता था। उन गांवों में ही ब्राह्मण आकर बसते थे और वहीं छोटे-बड़े मंदिर बने थे। वहां कई कारीगर व मज़दूर भी रहते थे।

मगर उन गांवों से भिन्न कई गांव थे। ये जंगलों के बीच बसी बस्तियां थीं। राजवंशों और सामंतों के समय में आज से काफी अधिक जंगल थे। बहुत से कबीले पहाड़ों और जंगलों में रहते थे। जंगल की चीज़ों के सहारे अपनी गुज़र बसर करते थे।

पहाड़ों और जंगलों में रहने वाले लोगों के बारे में तुमने पाठ 2 में क्या जाना था?

हर्षचरित और बाणभट्ट

विंध्याचल पर्वत के जंगलों में रहने वाले शबर नाम के वनवासियों का वर्णन हमें हर्षचरित में मिलता है। हर्षचरित उसी राजा हर्षवर्धन की जीवनी है जिसके बारे में तुम पढ़ चुके हो। हर्ष की यह जीवनी कवि बाणभट्ट ने लिखी थी।

बाणभट्ट लिखता है कि जब हर्ष की बहन राज्यश्री के पति की युद्ध में मृत्यु हुई तो वह दुख न सह सकी और कहीं चली गई। हर्ष उसे ढूंढते-ढूंढते विंध्य पर्वतों पर पहुंचा। हां वही विंध्य पर्वत जो भोपाल से होशंगाबाद के रास्ते में पड़ते हैं। इन पर्वतों के जंगल में हर्ष अपनी बहन को ढूंढता रहा। यूं तो अक्सर हम भी इन जंगलों से गुज़रते हैं। पर राजा हर्ष ने आज से 1400 साल पहले इन जंगलों में क्या देखा?

विंध्याचल पर्वत के वन में शिकार

राजा हर्ष ने देखा कि जंगल में कोई सड़क नहीं बनी है- केवल पगडंडियां हैं। मगर ये पगडंडियां भी साफ नज़र नहीं आती हैं- जंगलों से गुज़रने वाले बहुत कम हैं- शायद इसलिये। इन्हीं पगडंडियों पर चलते-चलते उसे कई दृश्य देखने को मिले। कहीं उसने देखा शेर को पकड़ने के लिए पेड़ों के बीच जाल बिछे हैं। जगह-जगह लोग लकड़ी जलाकर काठकोयला बना रहे हैं।

जंगल में बीच-बीच में कुछ शिकारी भी उसे दिखाई दिये। जानवरों और पक्षियों को पकड़ने के लिए वे तरह-तरह के जाल व फन्दे लिए हुये हैं। ये जाल व फन्दे

वनों में शिकार

जानवरों की शिराओं और तंतुओं से बने हैं। कुछ बहेलिये भी मिले। उनके पास पिंजरे में तीतर और शाहबाज़ बंद हैं। यहां वहां छोटे बच्चे भी टहनियों में गोंद लगाकर छोटी चिड़ियों को मारने की कोशिश कर रहे हैं।

बेचने जाते हुए

पगडंडियों पर जंगल के लोग जंगल से मिली चीज़ों का गट्ठर सर पर लादकर उन्हें बेचने जाते मिले। कई चीजें ले जा रहे थे- सिधु पेड़ की छाल, फल, सन के गट्ठे, शहद, मोरपंख, मोम, खदीर पेड़ की लकड़ी, खस, छाल, जड़ें, गुग्गल (धूप), सेमल की रूई आदि।

क्या इनमें से कोई चीज़ तुम्हारे आसपास मिलती है? क्या लोग उसे इकट्ठा करते हैं?

बेचने जाते हुए

जंगल के बीच खेती

बस्तियों के आसपास बरगद पेड़ के चारों तरफ सूखी लकड़ी से घेरा बना है। इनमें लोगों के पशु रहते हैं। कहीं दूर-दूर पर खेत दिख जाते हैं। हां- यहां के जंगलों में खुली जगह की कमी है- इसलिए खेत बहुत कम हैं और बिखरे हुए हैं।

यहां ज़मीन साफ कर के हाल ही में खेत बनाए गए हैं। कटे हुए पेड़ों के ठूंठ दिख रहे हैं। कुछ ठूंठों में तो पत्ते फिर से फूटने लगे हैं।

खेत जोतने के लिए ये लोग हल बैल का उपयोग नहीं करते हैं। यहां की मिट्टी लोहे की तरह काली और कठोर है। इसे वे कुदाल से खोदते हैं।

खेतों के बीच मचान बने हुए दिख रहे हैं- निश्चय ही यहां जंगली जानवरों का फसलों को खतरा रहता होगा।

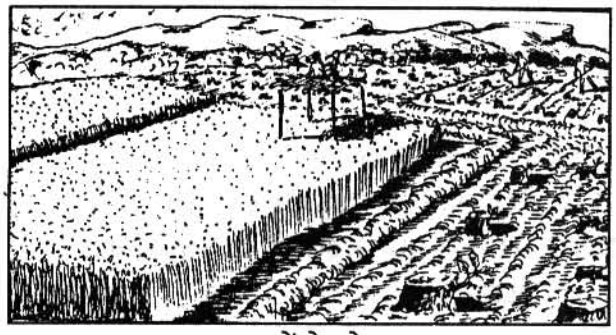

शबरों के खेत

वनवासियों की खेती के बारे में पांच महत्वपूर्ण शब्द रेखांकित करो।

बस्ती, बाड़े, घर

ऐसे चलते-चलते शाम हो रही थी, तो हर्ष एक बस्ती में आ पहुंचा। उसने देखा कि वनवासियों के घर एक-दूसरे से कुछ दूर-दूर बने हैं। हर घर के चारों तरफ झाड़ियों और कांटों का बाड़ा बना है। कहीं-कहीं बांस का झुरमुट भी है। इन्हीं से शायद वे अपने धनुष बनाते होंगे।

बाड़े में कुछ न कुछ उगता रहता है। अरण्डी, बैंगन, तुलसी, सिगरू (प्याज़ जैसी सब्ज़ी), सरकण्डा, कोदों, कुटकी, लौकी आदि। लम्बे डंडों पर लौकी की बेलें चढ़ी हैं। बाड़े में एकाध खदिर या बेर के पेड़ भी हैं। इनके नीचे बछिये बंधे हैं। घरों की छतों पर मुर्गे आवाज़ लगा रहे हैं।

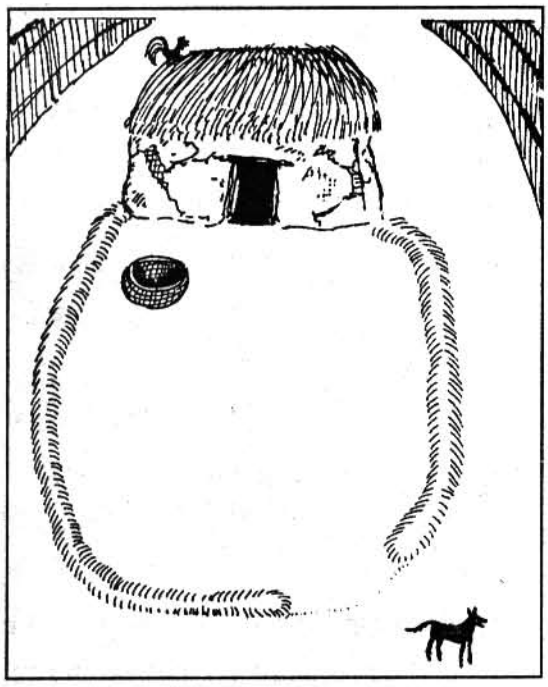

घर का आंगन

हर्ष ने देखा कि वनवासियों के घर बांस की खपच्चियों, पत्तों, व सरकण्डों के बने हैं। घरों में यहां वहां बहुत सी चीज़ें रखी हुयी हैं। इनमें से कई चीज़ें औरतों ने जंगल से इकट्ठी की हैं। वाकई कितनी सारी चीज़ें हैं! सेमल की रूई, जंगली धान, सिंघाड़े, गुड़, मखाने, बांस, चटाई, दवाई की जड़ी-बूटियां, खिरनी के बीज, महुआ आदि। बड़ी मात्रा में महुआ की शराब भी जमा की हुई है।

ये चीज़ें ऊपर दिए गए घर के चित्र में बनाओ या लिखो।

शबर युवक

हर्ष उस रात इसी गांव के पास रुका। अगले दिन सुबह उठ कर फिर अपनी बहन को ढूंढने निकला। चलते-चलते उसकी भेंट शबर कबीले के एक युवक से हुई। वह शबर कबीले के मुखिया का बेटा था। शबर युवक काले रंग का था। उसकी नाक चपटी और होंठ मोटे थे। उसके कानों में तोते के पंख लगे थे। कांच के मनके की बालियां वह कानों में पहने था। उसकी कलाई पर सुअर के बालों में सांप के ज़हर की काट बंधी हुई थी। हाथों में उसके टिन के कड़े थे। उसकी तलवार का हत्था किसी जानवर के सींग का बना था। तलवार खाल की म्यान में बंद थी।

शबर युवक की पीठ पर भालू और चीते की खाल से बनी तरकश लटक रही थी। उसमें ज़हरीले बाण रखे थे। उसके बाएं कंधे पर धनुष टंगा था। धनुष से एक तीतर और एक खरगोश लटक रहा था।

शबर युवक के चित्र में वो सब चीज़ें नहीं बनी हैं जो वह पहने था। उन्हें बनाओ।

शबर युवक के शरीर पर किन-किन जानवरों की चीज़ें थीं- सूची बनाओ।

शबर युवक ने हर्ष को प्रणाम किया और उसे तीतर और खरगोश भेंट में दिया। हर्ष ने उससे पूछा- "क्या तुमने मेरी बहन को इस जंगल में देखा है?" शबर युवक ने कहा,

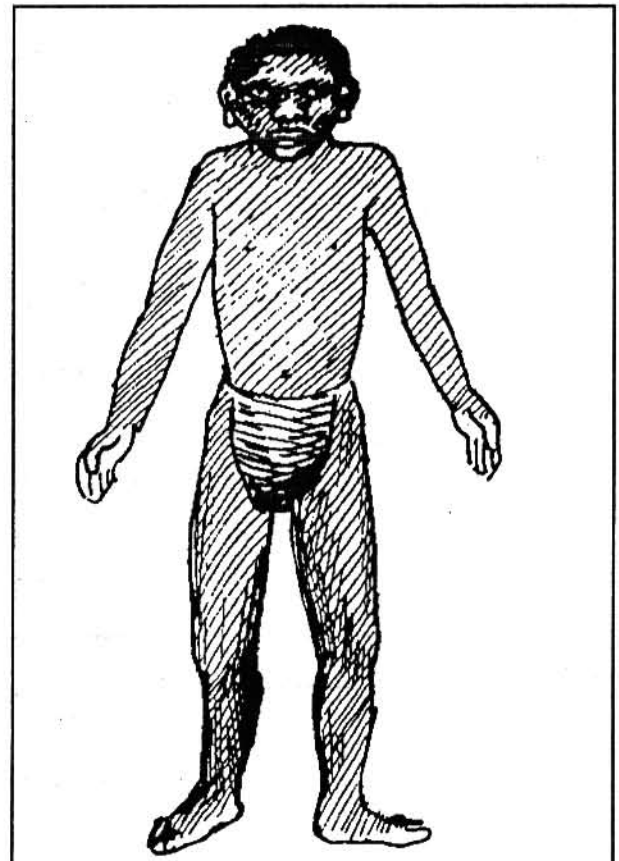

शबर युवक

"महाराज हम इस जंगल का चप्पा-चप्पा पहचानते हैं। मगर हमने आपकी बहन को नहीं देखा। यहीं पास में एक नदी है। उसके किनारे कुछ मुनि रहते हैं। उनके आश्रम में शायद आपको कोई खबर मिलेगी।"

हर्ष जब उस आश्रम में पहुंचा तो मुनियों ने उसका स्वागत किया। उन्होंने बताया कि "पास में एक भद्र महिला आग जलाकर उसमें जलकर मरने की तैयारी कर रही है। शायद वह आपकी बहन हो।" हर्ष भागता-भागता उस अग्निकुण्ड के पास जा पहुंचा। वहां उसने पाया कि वास्तव में वह उसकी बहन राज्यश्री ही थी जो जीवन से निराश होकर आत्महत्या कर रही थी। हर्ष और मुनियों ने राज्यश्री को खूब समझाया और रोकने में सफल हुए। फिर हर्ष अपनी बहन के साथ अपनी राजधानी लौट आया।

यह कहानी पढ़ते-पढ़ते आज से तेरह-चौदह सौ साल पहले विंध्य पर्वत के जंगलों में रहने वालों का जीवन हमारी आंखों के सामने तैर आया है। उन लोगों के जीवन की कितनी सारी छोटी-छोटी बातों पर बाणभट्ट का ध्यान गया था और कैसे बड़ी बारीकी से उसने विंध्यवासियों के जीवन का वर्णन लिखा है, पढ़कर आश्चर्य होता है।

तब और आज

आज भी अगर तुम विंध्य और सतपुड़ा पर्वतों के जंगलों में जाओ या बस्तर के जंगलों में तो तुम्हें ऐसे बहुत से दृश्य देखने को मिल जाएंगे।

तुमने कक्षा 6 में पाहवाड़ी गांव का वर्णन पढ़ा था। पाहवाड़ी सतपुड़ा पर्वत के जंगलों में बसा गांव है। आज के पाहवाड़ी गांव की बातों और हर्ष के समय के शबर वनवासियों की बातों में तुम्हें क्या कुछ समानताएं नज़र आईं?

1. खेत में 2. बस्ती व घरों में 3. बाड़े में 4. जंगल से लाई चीज़ों में

पर अब इन वनवासी लोगों का जीवन भी काफी बदलने लगा है। अब उनका जीवन पूरी तरह वैसा नहीं रहा जैसा हर्ष के समय में था।

उनके जीवन में क्या बदलाव आए हैं शायद तुम्हें इन बातों का कुछ ज्ञान हो। गुरुजी की मदद से इन बातों पर चर्चा करो और 6-7 वाक्य लिखो।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. इनमें से कौन सी बातें जंगलों में बसे वनवासियों के बारे में हैं और कौन सी बातें दूसरे खेतिहर गांवों की हैं? सूची में से अलग-अलग छांटकर तालिका में भरो।
   सूची- कुदाल से खेती, पहाड़ी खेत, सटे-सटे घर, हल बैल से खेती, दूर-दूर बने घर, अरघट्ट, ब्राह्मण, शिकार करके भोजन जुटाना, मंदिर, जंगलों की चीज़ों को इकट्ठा करके बेचना, कारीगर, राजा को कर देना।

वनवासी लोग	खेतीहर गांव

2. क- हर्ष के समय में वनवासी लोग क्या उगाते थे?
   ख- क्या बेचते थे?